कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) से कृषि का बदलता स्वरूप

डॉ. राजेन्द्र कुमार, सहा. आचार्य, भूगोल विभाग, एम. जे. कुम्हेरिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रावला मण्डी
jogpalrk1986@gmail.com

शोध साराषं

कृषि के जीवनचक्र में कठोर मौसम परिवर्तन, पोषण की कमी, अपर्याप्त सिंचाई अवसंरचना और गलत उत्पादन से सम्बंधित निर्णय भारतीय किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों में शुमार हैं। कृत्रिम बुद्विमत्ता ने इन परिस्थतियों में कृषि गतिविधियों के सपफल निर्णय लेने और इनके सपफल कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कृत्रिम बुद्विमत्ता एक मशीन की संज्ञानात्मक कार्य करने की क्षमता को संदर्भित करता है जैसे कि सोचना, समझना, सीखना, समस्या को हल करना और निर्णय लेना। कृत्रिम बुद्विमत्ता उत्पादन और दक्षता बढ़ाने में कई प्रकार के कृषि क्षेत्रों में लाभकारी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने कृषि को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने का मार्ग प्रशस्त किया है। हालांकि, इसके व्यापक उपयोग के लिए किसानों को तकनीकी शिक्षा, सस्ती तकनीक और सरकारी समर्थन की आवश्यकता है। यदि इसे सही दिशा में लागू किया जाए, तो AI कृषि को अधिक टिकाऊ और लाभकारी बना सकता है। प्रत्येक उद्योग में कृत्रिम बुद्विमत्ता ए आई प्रौद्योगिकियां पारंपरिक बाधाओं को दूर करने में सहायता कर रही हैं। कृषि में इसका हस्तक्षेप हानिकारक पर्यावरणीय प्रभावों को कम करते हुए किसानों को उनकी कृषि दक्षता बढ़ाने में सहायता प्रदान करता है। समग्र परिणामों में सुधार के लिए कृषि व्यवसाय ने इसे खुले हाथों से इसे अपनाया है। इस प्रौद्योगिकी के परिणामस्वरूप अन्न उत्पादन के तरीके में बदलाव आ रहा है।